RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

"संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप - शेखावाटी के संदर्भ में"

अंतिमा शर्मा, शोधार्थी, इतिहास विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, कटराथल (सीकर), राजस्थान, भारत

सारांश

"प्रोफेसर डाडवेल" का कथन है कि – भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है जिसमें नदियां आकर विलीन होती रही –विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति एक महासमुद्र के समान है, जिसकी विशालता और गहराई का अंदाजा लगा पाना एक कठिन कार्य है। हमारी भारतीय संस्कृति अनेकों चरणों से गुजरती हुई हड़प्पा से लेकर वर्तमान तक कई रूपों में बदली है लेकिन अभी तक अपने मूल स्वरूप को बचाए रखने में सफल रही है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहिष्णुता व लचीलापन है, जो आध्यात्मिकता में भौतिकता का अनूठा समन्वय है। इसी महासमुद्री संस्कृति की एक प्रमुख धारा देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में बह रही है। राजस्थान अपनी वीरता व परंपराओं के संरक्षण के लिए सदैव ही वंदनीय रहा है यहां की संस्कृति विश्व में सबसे अनूठी है, राजस्थान वही धरती है जहां शरणागत की रक्षा(हम्मीर) से लेकर पर्यावरण रक्षण (अमृता देवी बिश्नोई) हेतु बहादुरों ने अपने प्राणों तक का बलिदान गर्व पूर्वक दिया है । राजस्थान की माटी का प्रत्येक कण अपनी सांस्कृतिक वैभव का अद्‌भुत उदाहरण रहा है । इसी वीरभूमि राजस्थान के पूर्वोत्तरी अंचल में फैले शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं यहां की सांस्कृतिक विभिन्नता व नैतिकता के अनूठे आयाम है, जिसकी संस्कृति व नैतिकता का इतिहास गणेश्वर सभ्यता से लेकर वर्तमान ग्लोबलाइजेशन के युग तक लगातार बदलता रहा है ।

कूट शब्द : भारत, राजस्थान, शेखावाटी, संस्कृति, नैतिकता, भौतिकता, संस्कार, सहिष्णुता, जनजीवन

प्रस्तावना

वैदिक काल से लेकर वर्चुअल रियलिटी के युग तक भारतीय सभ्यता व संस्कृति कई चरणों से गुजरी है, जिसके अवशेष आज विरासत के रूप में है जो हमारी उत्पत्ति, विकास, विनाश और पुनर्विकास की झलकियां हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। प्रसिद्ध विद्वान "मैक्स मूलर" का कथन है कि- 'अगर कोई देश है जो मानवता के लिए पूर्ण और आदर्श है तो एशिया की ओर उंगली उठाऊंगा जहां भारत है।' इसी सांस्कृतिक समृद्धता की जीवंत झलक हमें भारत के भौगोलिक रूप से सबसे बड़े राज्य राजस्थान में देखने को मिलती है । राजस्थान के ऐतिहासिक गौरव और महान वीरों की शौर्य गाथा के दर्शन आपको इस मरुभूमि में पग – पग पर मिलेंगे जो इसकी विरासतीय समृध्दिता का परिचायक है । इसी मरुभूमि का एक प्रमुख भाग शेखावाटी प्रदेश है जो अपनी अनूठी सांस्कृतिक विशिष्टता को संजोए हैं, इस धरा में त्याग तपस्या व तपोवन का विशिष्ट संगम प्राप्त होता है । इसका शेखावाटी नाम विगतकालीन पांच शताब्दी में इस भूभाग प्रशासन करने वाले 'शेखावत' क्षत्रियों के नाम पर पड़ा है इसके संस्थापक 'महाराव शेखा' जी थे वर्तमान में इसमें तीन प्रमुख जिले सम्मिलित है- सीकर, झुंझुनू, चूरू ।

शेखावाटी की संस्कृति व विरासत की पृष्ठभूमि और महत्व –

14 वीं शताब्दी का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र शेखावाटी अब राजस्थान का एक पर्यटन केंद्र है, क्योंकि क्षेत्र के समृद्ध व्यापारियों के राज्य ठाठ-भारत का एक प्रतिबिंब शेखावाटी उन व्यापारियों की विरासत से गर्वित है, जिन्होंने अपने वास्तु रत्न इसे समर्पित किया। इस क्षेत्र का हर नुक्कड़ और कोना लोककथाओ, धार्मिक किवंदतियों और और इसके भव्य अतीत की विशिष्ठाओं के चारों ओर घूमती रंगीन उमंग भरी चित्रकलाओं से जीवंत है । शेखावाटी नाम लेने मात्र से ही आज भी शौर्य का संचार होता है । शिक्षा साहित्य संस्कृति तथा कला की भाव उर्मियाँ उद्वेलित होने लगती है । यहां की भित्ति चित्रकला ने तो शेखावाटी का नाम पूरे संसार में उजागर किया है । यह धन्य धरा ऋषियों की तपोभूमि, कृषकों की कर्मभूमि रही है । देखा जाए तो संपूर्ण राजस्थान मंदिरों, बावड़ियों, किलो, जल निकायों, महलों से भरा हुआ है। परंतु दिल्ली- जयपुर- बीकानेर के रास्ते पर स्थित उत्तर-पूर्वी राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र आगंतुकों को यहां सदियों पहले बसे धनाढ्य व्यापारियों की शानदार रूप से अलंकृत हवेलियों की ओर आकर्षित करता है यहां की दीवारों पर बने सुंदर भित्ति चित्र बेहद आकर्षक है जिसके कारण इसे देश के सबसे बड़ी "ओपन आर्ट गैलरी" (खुली कला दीर्घा) कहा जाता है ।

शेखावाटी में सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख आकर्षण –

शेखावाटी सांस्कृतिक विरासत का खजाना है यहां के ऐतिहासिक स्थल, पारंपरिक कला व शिल्प, जीवंत त्योहार और स्थानीय व्यंजन इसके समृद्ध सांस्कृतिक दृश्य में भूमिका निभाते हैं । इस खंड में इन्हीं आकर्षणों का विस्तार से अध्ययन करना है और उनके विरासती महत्व पर प्रकाश डालना है ।

शेखावाटी की संस्कृति के विशिष्ट आयाम वह उनके बदलते स्वरूप-

शेखावाटी की संस्कृति विचित्रता व विविधता से भरी है जिसमें विशिष्टता भी भरपूर है यहां की संस्कृति में

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

सरलता, समरसता व शौर्य है तो वहीं आस्था, उल्लास व आनंद भी अनंत है । इस क्षेत्र के रीति-रिवाज मेले त्योहार नृत्य संगीत पहनावा खान पान अपनी विरासत की खुशबू लिए हैं ।

•वेशभूषा – शेखावाटी अंचल का पहनावा अनूठा है यहां की महिलाएं लहंगा, लुगड़ी, कांचली, कुर्ती पहनती है वहीं पुरुषों द्वारा धोती-कुर्ता तथा साफा पहना जाता है उदाहरणतः "स्वामी विवेकानंद" जी द्वारा पहने जाने वाला 'साफा' शेखावाटी की पहचान रही है । हालांकि वर्तमान में बढ़ते शहरीकरण के कारण पहनावे पर पश्चिमीकरण हावी हो रहा है जिसके चलते पारंपरिक परिधानों का स्थान वर्तमान पश्चिमी परिधान जींस, पैंट, टी-शर्ट इत्यादि ने ले लिया है।

•खानपान – शेखावाटी के लोगों का खानपान मौसम के हिसाब से रहता है गर्मियों में गेहूं व जौ के व्यंजन तथा सर्दियों में बाजरे की भूमिका प्रमुख होती है । शेखावाटी का दाल-बाटी – चूरमा व चिड़ावा के पेड़े तो देश भर में प्रसिद्ध है ही, परंतु साथ यहां का पारंपरिक खानपान अति विशिष्ट है जिसके कुछ व्यंजन इस प्रकार हैं – बाजरे की रोटी, मोठ बाजरा की खिचड़ी, खाटे की राबड़ी, गट्टे का साग, काचरे की चटनी, कैर – सांगरी का साग प्रमुखत: होते हैं । मीठे में गुड़ की लापसी, खरीटीं के लडडू, मैथी के लडडू, ग्वारपाठे के लड्डू व शरबत में बील व पुदीने का शरबत प्रमुखतः होता है।

यह व्यंजन इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिदिन के आहार के अंग है परंतु लगातार पाश्चात्य प्रभाव के बढ़ने से उनके विकल्प के रूप में बर्गर, पिज़्ज़ा, पेप्सी, कोका-कोला, मैगी समेत अन्य पैकेट बंद खाने का प्रसार बढ़ता जा रहा है । जिससे कुपोषण समेत अनेक गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। अतएव पारंपरिक खान-पान के प्रति सजकता रखकर निरोग जीवन की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इस विरासत के संरक्षण का महत्व सिर्फ प्राचीन परंपराओं के संरक्षण से हैं अभी तो बेहतर व स्वस्थ भविष्य की नींव के रूप में है ।

•लोक नृत्य, लोकगीत व ख्याल – शेखावाटी की संस्कृति में लोक नृत्य का अपना विशेष महत्व है गिदंड, चंग, कच्छी घोड़ी, ढप प्रमुख है ।यह लोक नृत्य युवा पीढ़ी को हमारी संस्कृति से परिचित कराते हैं । वही लोक गीतों में 'चौमासे के गीत','कार्तिक मास के गीत' आते है इनके साथ ही जन्म से मृत्यु तक के विभिन्न संस्कारों पर गाए जाने वाले लोकगीत प्रचलित हैं । शेखावाटी ख्याल राजस्थान का एक लोक नाटक है यह मालवी गीतों और चित्रों से मिलता-जुलता है शेखावाटी ख्याल के संस्थापक "नानूराम" थे। 'नानूराम' और 'पुजीरा तेजी' के काल को शेखावाटी ख्याल का स्वर्ण काल माना जाता है इसके अन्य प्रमुख कलाकार 'दूलिया राणा' भी रहे हैं। परंतु वर्तमान में बॉलीवुड व हॉलीवुड के अंधानुकरण से भावी पीढ़ियां द्वारा इनका तिरस्कार इनके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है ।

•मेले व त्यौहार – शेखावाटी में त्योहारों की एक अलग छठा है यहां होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, रमजान, ईद के साथ-साथ ही स्थानीय त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं जिसमें गणगौर, गोगा, नवमी, हरियाली तीज आदि आते हैं । शेखावाटी में कई प्रसिद्ध मेलें लगते हैं जहां देश-विदेश से लोग आते हैं यह जन आस्था के साथ-साथ एकता का भाव संगम दर्शाते हैं उदाहरणतः खाटू श्याम जी का लक्खी मेला, जीण माता मेला, नरहड़ पीर का मेला, फतेहपुर उर्स आदि । यह मेले न सिर्फ संस्कृति के वाहक है अपित आर्थिक विकास का एक प्रमुख साधन है, जो कि इन स्थानों पर निवास करने वाले जनजीवन के अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है तथा उनकी आजीविका का एक प्रमुख साधन है।

•शेखावाटी की भाषा व साहित्य – शेखावाटी राजस्थानी भाषा की एक बोली है, जो इस क्षेत्र के 30 लाख वक्ताओं द्वारा बोली जाती है। इस बोली का साहित्य भी अत्यंत समृद्ध है जिस पर विस्तृत शोध कार्य की आवश्यकता है। भाषा केवल संवाद का माध्यम भर नहीं होती भाषा सभ्यता व संस्कृति की आत्मा होती है। वर्तमान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के तथा प्रौद्योगिकी के युग में अपनी भाषा का संरक्षण समय की एक प्रमुख मांग व अपनी विरासत को संजोग कर रखना प्रमुख आवश्यकता बन गया है।

शेखावाटी की नैतिक परंपराएं व उनमें आते बदलाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो कि समाज में कुछ निश्चित नियमों द्वारा संचालित होता है एक समाज के रूप में रहते रहते व्यक्ति को कई ऐसे नियमों का पालन करता होता है जो अपने साथ-साथ दूसरों के भी समान रूप से विकास हेतु आवश्यक होते हैं। भारतीय संस्कृति का इतिहास अति प्राचीन है तथा यह अपने बड़ों का सम्मान करना प्रकृति का पूजन करना माता-पिता का सम्मान करना, गुरुजनों का आदर करना, अपने से छोटों का सम्मान करना इसके मूल में पाया जाता है। शेखावाटी की संस्कृति भी इन्हीं सभी नैतिक परंपराओं से संगठित एक सुदृढ़ सामाजिक व्यवस्था है जिसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है-

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

संस्कार – संस्कार जीवन जीने की एक पद्धति होती है जिसमें वे सभी गुण सम्मिलित होते हैं जो जीवन को संगठित रूप से संचालित करने हेतु आवश्यक होते हैं। उदाहरण के रूप में सत्य बोलना एक प्रमुख संस्कार है। 'सत्यमेव जयते' का सिद्धांत यहां की संस्कृति का आधार है।

नैतिक परंपरा की नींव परिवार- परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला होता है समस्त नैतिक ज्ञान का स्रोत होता है। व्यक्ति में जो भी संस्कार होते हैं वह मूलतः परिवार के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। प्राचीन काल से ही शेखावाटी क्षेत्र में संयुक्त परिवार प्रथा रही है, लेकिन वर्तमान बदलते परिवेश में यह पता लगातार एकल परिवार के रूप में बदलते जा रही है। इसका सबसे विध्वंशसक रूप बुजुर्गों की उपेक्षा से संबंधित है जो की अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। शेखावाटी का सामाज ऐसा समाज रहा है जिसमें काकोसा, बाबोसा व दादोसा ज्ञान के प्रमुख स्रोत हुआ करते थे आज इसमें की अपेक्षा एक अत्यंत चिंतनीय विषय है जिस और ध्यान देना अति आवश्यक है। सामाजिक परिवेश चाहे जितना बदल जाए परंतु हमारी मूल अवधारणाएं बनी रहनी चाहिए क्योंकि वह हमारी अनूठी संस्कृत विशिष्ट की स्रोत है।

महिलाएं व बच्चे - नारियों का सम्मान करना और बच्चों के प्रति प्रेम रखने या की संस्कृति के प्रमुख पहलू हैं । भारतीय परंपरा का आदर्श रहा है, जहां नारियों का सम्मान नहीं होता वहां समस्त शुभ कर्म निष्फल हो जाते हैं। वर्तमान AI के युग में रूढ़िवादिता के पिंजरे से हटकर महिलाओं ने अनेकों क्षेत्र में प्रगति की है। शेखावाटी का क्षेत्र तो वैसे भी इस मामले में सदा ही अग्रणी रहा है भले ही आज का जमाना AI का है परंतु शेखावाटी क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा कार्य सदैव से किया जा रहे हो आप इसका उदाहरण 'किशोरी देवी', 'जानकी देवी बजाज' जैसी महिलाओं से ले सकते हैं और वर्तमान में 'मोहना सिंह' से ले सकते हैं। अर्थात शेखावाटी का समाज सदैव ही महिला समानता व प्रगति का एक अच्छा उदाहरण रहा है।

शिक्षा - शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख स्रोत है शेखावाटी का क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान में सबसे ज्यादा विकसित क्षेत्रों में से एक है । जहां पर प्रत्येक प्रकार की शिक्षा जैसे- चिकित्सा, अभियांत्रिकी, शैक्षणिक प्रकार की शिक्षाओं का विस्तार अत्यधिक हो गया है । यह क्षेत्र संपूर्ण देश भर में शिक्षा के क्षेत्र में उभरता हुआ नाम बनता जा रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा मेटा वर्ल्ड का प्रभाव यह है कि वर्तमान में शिक्षा के लिए व्यक्ति को मात्र शैक्षणिक संस्थानों पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है यह कई प्रकार से ऑनलाइन माध्यमों द्वारा भी प्रसारित है जो सर्व शिक्षा अभियान का एक प्रमुख हिस्सा है जन-जन तक इसकी सुलभ पहुंच है जिसका सबसे बड़ा कारण तकनीक का प्रसार ही है।

संस्कृति व नैतिकता का संरक्षण आवश्यक क्यों ?

संस्कृति व नैतिकता ऐसी विशेषताएं हैं जो स्वभावता ही पालन की जानी चाहिए परंतु यह एक गंभीर विषय बनता जा रहा है लगातार तकनीक के युग में संस्कृति व नैतिकता के आयाम बदलते जा रहे हैं पुरानी परंपराओं का स्थान नई परंपराएं ले रही है । 'नमस्ते' का स्थान 'हेलो' ने ले लिया है, 'पांव छूने' का स्थान दूर से 'हाथ हिलाने' तक सीमित रह गया है। जीवन में तकनीक का स्थान वर्तमान में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता तकनीक के साथ कदम से कदम बढ़ाकर चलना समय की आवश्यकता है, परंतु हमें अपने इतिहास और अपनी परंपराओं का पालन करना चाहिए और इन परंपराओं का संरक्षण भी करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी है यह सीख सके कि वह किस महान सभ्यता में जन्मे हैं। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हमें एक नई प्रकार की शिक्षा दी गई और उस शिक्षा में एक भाव पैदा होने लगा कि हमारी पुरानी चीज दकियानूसी है, अगर हमको आधुनिक बनना है तो इन सब से हटाना होगा और उसका परिणाम यह हुआ कि हमारी संस्कृति की लगातार अनदेखी होती रही हम अपनी श्रद्धा व जुड़ाव को खोते चले गए और उसका परिणाम यह हुआ कि हम समाज के रूप में विरासत के संरक्षण में जो भूमिका निभाते आ रहे थे, उसको छोड़ दिया गया। संरक्षण व संतुलन की भारतीय सोच को छोड़कर विदेशी सोच का अनुसरण हमारी संस्कृति के लिए घातक सिद्ध हो रहा है, तीव्र आधुनिकता की दौड़ में अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखना हमारे अस्तित्व रक्षण हेतु जरूरी है हम लगातार वैश्वीकरण के प्रभाव से मोहित हो रहे हैं। तकनीक से संबंध से बैठाते बैठाते कहीं अपनी संस्कृति को पीछे छोड़ते जा रहे हैं ऐसे में सजग रूप से इस और ध्यान देकर इसका संरक्षण व संवर्धन करना हमारी प्राथमिकता में आना चाहिए।

संस्कृति व नैतिकता के समक्ष चुनौतियां –

21वीं सदी के इस तीव्र आधुनिकता के दौर में संस्कृति व नैतिकता के नियमों के समक्ष से कई प्रकार की चुनौतियां उत्पन्न हुई है शेखावाटी क्षेत्र भी इन चुनौतियों से अधूरा नहीं है जिनका विवरण कुछ इस प्रकार है –

o**जागरूकता का अभाव** - वर्तमान की परेशानियों से जूझते हुए मानवीय समाज ने अपनी संस्कृति पर परंपराओं से एक अजीब सी दूरी बना ली है, हमें आवश्यकता है सजग रूप से अपनी परंपराओं व संस्कृति व नैतिकता का

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

अनुसरण करने का इस और जागृत रूप से ध्यान देने का ताकि हम न सिर्फ अपने लिए बल्कि अपनी भावी पीढ़ीयो के लिए एक सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सके।

o**पश्चिम का अंधानुकरण** – पश्चिमीकरण की भव्यता वह उन्हें श्रेष्ठ समझने की एक गलत मानसिकता के चलते लगातार समाज का एक वर्ग अपनी संस्कृति से पीछे हटता जा रहा है, इस अंधानुकरण का भयानक परिणाम हो सकता है। हम अपनी मूल जड़ों से कट कर अपने भविष्य को निराधार कर रहे हैं, क्योंकि जो समाज अपने मूल को भूल जाता है वह वृद्धि नहीं कर सकता अतः हमें आगे अवश्य बढ़ाना है परंतु अपनी जड़ों से सदैव जुड़ा रहना है।

o**वैश्वीकरण का प्रभाव** – भारतीय परंपरा सदैव ही "वसुधैव कुटुंबकम्" की परंपरा से अभीभूत रही है। समस्त विश्व हमारा घर है यह अवधारणा हमारी संस्कृति की विशेषता रही है परंतु इन सब में हमने अपनी संस्कृति का सम्मान सर्वोपरि रखा है। वर्तमान समय में भी चाहे जितनी तकनीक की तीव्रता हो हमें अपनी मूल की आवश्यकता सदैव रहेगी भारतीय संस्कृति जिसमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह जैसी अवधारणाएं व्यक्ति के जीवन का हिस्सा रही है उनकी आवश्यकता हमें सदैव रहेगी इन आधारों पर विकसित समाज एक सुदृढ़ भविष्य की नींव रखता है, और हमें संस्कृति और सभ्यता से सराबोर वैसा ही समाज बनना है।

o**रोजगार प्रवृत्ति** - प्राथमिक क्षेत्र का लगातार अर्थव्यवस्था में घटता स्तर व्यक्तियों को रोजगार के अन्य स्रोतों की खोज करने को मजबूर करता है ऐसे में उन्हें 'प्रवसन' करना पड़ता है और इस 'प्रवसन' के दौरान वे अपनी जड़ों से दूर होते जाते हैं और अपनी सभ्यता, संस्कृति व नैतिक नियमों से अलगाव का सामना करते हैं यह परिवर्तन अक्सर संस्कृति के लिए एक विकट समस्या के रूप में सामने आता है और सांस्कृतिक परंपराओं को आघात होता है।

केस स्टडी – "रामकृष्ण की जीवन यात्रा"

'रामकृष्ण जी' जो एक 87 वर्ष के व्यक्ति हैं उनसे बातचीत करके पता चला कि जब वह छोटे थे तब उनके मनोरंजन के साधन व अपने से बड़ों से बात करने की परंपराएं काफी अलग थी। उन्होंने किस्सा बताया कि 'जब वे छोटे थे तब मनोरंजन के लिए या आयोजनों के हिसाब से जागरण में गीत गाए जाते थे और एक माइक भी उनके पास नहीं हुआ करता था वर्तमान में उनके घर में होने वाली दैनिक आरती के समय भी भजन इत्यादि स्पीकर पर लगाकर काफी ऊंची आवाज में सुनाई दे सकते हैं यह परिवर्तन उन्हें अचंभित करने वाला है।' उन्होंने बताया कि 'जब उन्हें मिठाई इत्यादि खरीदनी होती थी तो उन्हें काफी दूर जाकर किसी दुकान से वह खरीद कर लानी पड़ती थी परंतु जब यही काम उन्होंने अपने तीसरी पीढ़ी के एक बच्चे को कहा तो उसने मात्र 15 मिनट में घर बैठे वहीं मिठाइयां मंगवा कर दे दी।' यह देख कर उनको यह समझ आया की तकनीक ने कितना कुछ बदल दिया है कार्य करने की पद्धति व नजरिया पूरी तरह से बदल गया है परंतु एक चीज स्थाई अभी भी है वह है नैतिक नियम जो उनके आगे की पीढ़िया पालन कर रही है।

शेखावाटी की अनूठी संस्कृति के संरक्षण व नैतिकता में वृद्धि के प्रमुख उपाय

यह तथ्य स्वाभाविक है की संस्कृति का पालन हमारे बिना किसी बाहरी दबाव के आंतरिक रूप से ही संचारित होना चाहिए, परंतु वर्तमान में सजक रूप से लगातार बदलते परिवेश में अपनी संस्कृति व नैतिकता के नियमों को संजोग कर रखना आवश्यक है। इस हेतु निम्न उपाय किए जा सकते हैं-

- **सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देना** – संस्कृति के संरक्षण का कार्य सामाजिक सहयोग से ही संभव है, अपनी संस्कृति के संरक्षण की जिम्मेदारी हम सब की सांझी है यह हम सब का एक सांझा उत्तरदायित्व है। सामाजिक जागरूकता के अभाव में संरक्षण का कार्य संभव नहीं है अतः जागरूकता के प्रयास करना अति आवश्यक है।
- **सांस्कृतिक शिक्षा में वृद्धि** – युवा पीढ़ी के बीच सांस्कृतिक विरासत के लिए गर्व और प्रशंसा की भावना पैदा करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक शिक्षा को शामिल करना आवश्यक है । साथ ही सांस्कृतिक विरासत और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों और पहलुओं का विकास करना तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम आयोजित करवाना कार्यशालाएं और इंटरएक्टिव अनुभव प्रदान करने वाली गतिविधियों का प्रारंभ करना आवश्यक है।
- **परंपरा में तकनीक का सामंजस्य** – वर्तमान में तकनीक को ना करना अपने भविष्य को अंधकार में डालने के समान है, परंतु यही बात अपनी संस्कृति व नैतिक परंपराओं की अवहेलना करने पर भी लागू होती है। हमें दोनों का सामान जिस बैठक एक सुगठित भविष्य का निर्माण करना होगा, इस हेतु हमें सजक रूप से इस क्षेत्र में कार्य करना होगा उदाहरण के रूप में हमें नई वेशभूषा भी पहनी है परंतु अपनी पारंपरिक वेशभूषा को भी लगातार बढ़ावा देना है । हमें अंग्रेजी समेत अन्य विदेशी भाषाएं आनी चाहिए परंतु अपनी मूल मातृभाषा, अपनी मां बोली को भी बढ़ावा देना होगा ।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

प्रौद्योगिकी का प्रयोग संरक्षण हेतु - वर्तमान 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' समेत नई तकनीकी के माध्यम से आप अपनी वर्षों से चली आ रही परंपराओं को एक 'क्लाउड' पर स्टोर करके उन्हें अनंत काल तक सुरक्षित रख सकते हैं इस हेतु हमें भी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं नैतिक मूल्यों को इस तकनीक के सहायता से अपने समाज और लोगों के बीच इसे बढ़ावा देने हेतु प्रसारित करना है।

निष्कर्ष - हमारी संस्कृति व नैतिक परंपराएं विश्व स्तर पर हमारी अनूठी पहचान का आधार है। अनेकों विदेशी आक्रमण का सामना करते हुए भी भारत की गौरवमयी संस्कृति ने वर्षों की गुलामी के बाद भी स्वयं को पुरजोर रूप से खड़ा रखा है। 'अनेकता में एकता', 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी समावेशी भावना रखने वाली हमारी भारतीय संस्कृति विश्व में एक अनूठा उदाहरण है । जिसकी आवश्यकता इस वैश्विक समाज को वर्तमान में सर्वाधिक है लगातार बढ़ते आपसी युद्धों व मतभेदों के चलते वैश्विक अशांति का दौर चल रहा है एक तरफ 'रूस' व 'यूक्रेन' जैसे देश आपस में युद्ध में लिप्त है वही 'इजराइल' व 'फिलिस्तीन' जैसे देश अपने हितों को लेकर टकरा रहे हैं चीन, अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस, इटली, ऑस्ट्रेलिया समेत अनेको देश अपनी आपसी रंजिश के चलते वैश्विक पटल पर संघर्षशील है। ऐसे में भारत जैसा देश जिसने सदैव से ही शांति और अहिंसा की पैरवी की है जो यह बताती है कि युद्ध का मार्ग कभी स्थाई हल नहीं हो सकता अपितु हमें बुद्ध के मार्ग पर चलकर भविष्य में विकास की आवश्यकता है, जो विकास न सिर्फ सतत हो बल्कि समावेशी भी हो। इस शोध मैं हमने शेखावाटी क्षेत्र की संस्कृति की विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा की है, जिसे मात्र विचारो तक सीमित न करके उसे संकल्प के रूप में अपनी पूर्ण क्षमता से इन नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन करना है तथा अपनी अमूल्य धरोहर और पहचान के आधारों का संरक्षण करना है।

संदर्भ सूची –

1. शर्मा, ग 1990, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी , जयपुर ।
2. मील, डॉ . महेन्द्र : 2015, राजस्थानी लोकनाट्य और शेखावाटी ख्याल, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर ।
3. शेखावत, सुरजन सिहः 1989 , शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास , सुरजन सिंह शेखावत स्मृति संस्थान प्रकाशन , झाझड़ , झुंझुनू ।
4. शेखावत, सौभाग्य सिंह : 1991, शेखावाटी केवीर गीत, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान , जोधपुर ।
5. Cooper , Ilay : Rajasthan exploring "the painted town of Shekhawati" प्रकाश बुक डिपो।
6. मिश्र, रत्नलाल : 1998, शेखावाटी का नवीन इतिहास, B.R. Publication
7. व्यास , हेतप्रकाश, 24 सितम्बर 2006, आबाद हुई हवेलियां, रविवारिय , राजस्थान पत्रिका
8. भारद्वाज , विनोद , 20 अक्टूम्बर, 2015 : मरुधरा का गौरव शेखावाटी, राजस्थान सुजस
9. 4 अक्टूबर , 2024 : दैनिक भास्कर ,चित्तौड़गढ़ अंक
10. www. Ramgarhshekhawati.com
11. www.bharatdiscovery.org.
12. www.m.bhaskar.com